=वस्त्र का

8. व्यापार और उद्योग :—

(i) इस युग के व्यापार मुख्यतः पणि लोग के हाथ में था आन्तरिक और वैदेशिक दो प्रकार के व्यापार का उल्लेख मिलता है। लेकिन व्यापार समझता सही अर्थों में अस्तित्व में नहीं आया था—

(ii) वस्तु विनिमय के आधार पर वस्तुओं के आदान प्रदान का प्रचलन रहा होगा किन्तु स्वर्ण एवं चाँदी की इकाई निष्क शतमान, कृष्णल, पाद इत्यादि मुद्राओं का उल्लेख मिलता है लेकिन विद्वानों का मानना है कि ये मुद्रा नहीं थे बल्कि धातुओं के ढेर के समान थे

ऋग्वैदिक अर्थव्यवस्था के उपरोक्त सर्वेक्षण से यह आभास मिलता है कि प्रारम्भिक आर्यों की अर्थव्यवस्था केवल निर्वाह अर्थव्यवस्था अर्थव्यवस्था थी कुस्वामित्व के आधार पर व्यक्तिगत सम्पत्ती का कोई सिद्धान्त नहीं था अतः उसकी तार्किक परिणती सुसंगठित कबायली सामाजिक संगठन ही था समाज में ऐसा विभाजन दृष्टिगोचर नहीं होता है कि एक विशेष वर्ग उत्पादक है और दूसरा उत्पादन का नियंत्रण करता हो